पाठ-1

सूरज और हवा

चित्रकथा

हर वस्तु के अपने विशेष गुण होते हैं। इसी प्रकार मनुष्य में भी अनेक गुण होते हैं। यदि कोई अपने गुण पर अभिमान करे तो आप कैसा महसूस करते हैं? क्या अपने गुणों पर अभिमान करना ठीक है?

एक बार सूरज और हवा में बहस छिड़ गई।

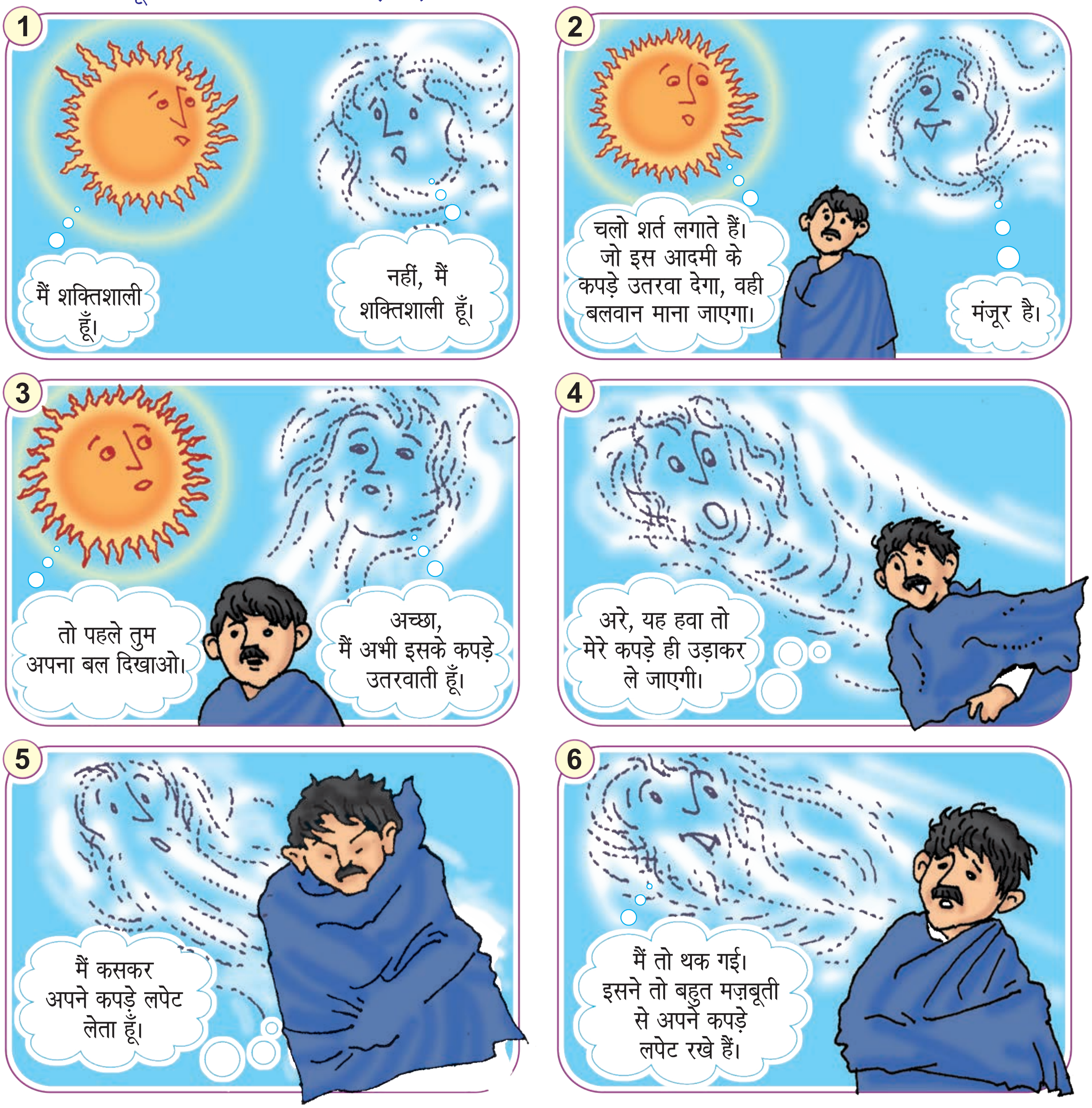

शिक्षण-संकेत : बच्चों को समझाएँ कि अभिमान न करें तथा दूसरों के गुणों का भी सम्मान करें।

घमंडी का सिर नीचा होता है।

पाठ-3

परिश्रमी चींटी

संवाद

क्या आप आने वाले समय की तैयारी पहले से ही करते हैं या नहीं? परीक्षा आने पर ही पढ़ते हैं या प्रारंभ से ही नियम से अपनी पढ़ाई करते हैं। पढ़िए और जानिए कि क्या उचित है?

टिड्डा - चींटी रानी, दोपहर का समय है। इतनी भयंकर गर्मी पड़ रही है। लू भी चल रही है। घर जाकर आराम करो।

चींटी - नहीं भाई, ज़्यादा आराम करना भी अच्छा नहीं होता। मैं तो कहती हूँ कि तुम भी खाने की कुछ सामग्री अभी से इकट्ठा कर लो।

टिड्डा - मैं तुम्हारी तरह लालची नहीं हूँ। मैं तो खा-पीकर मस्त हूँ। मेरा तो गाना गाने का मन कर रहा है।

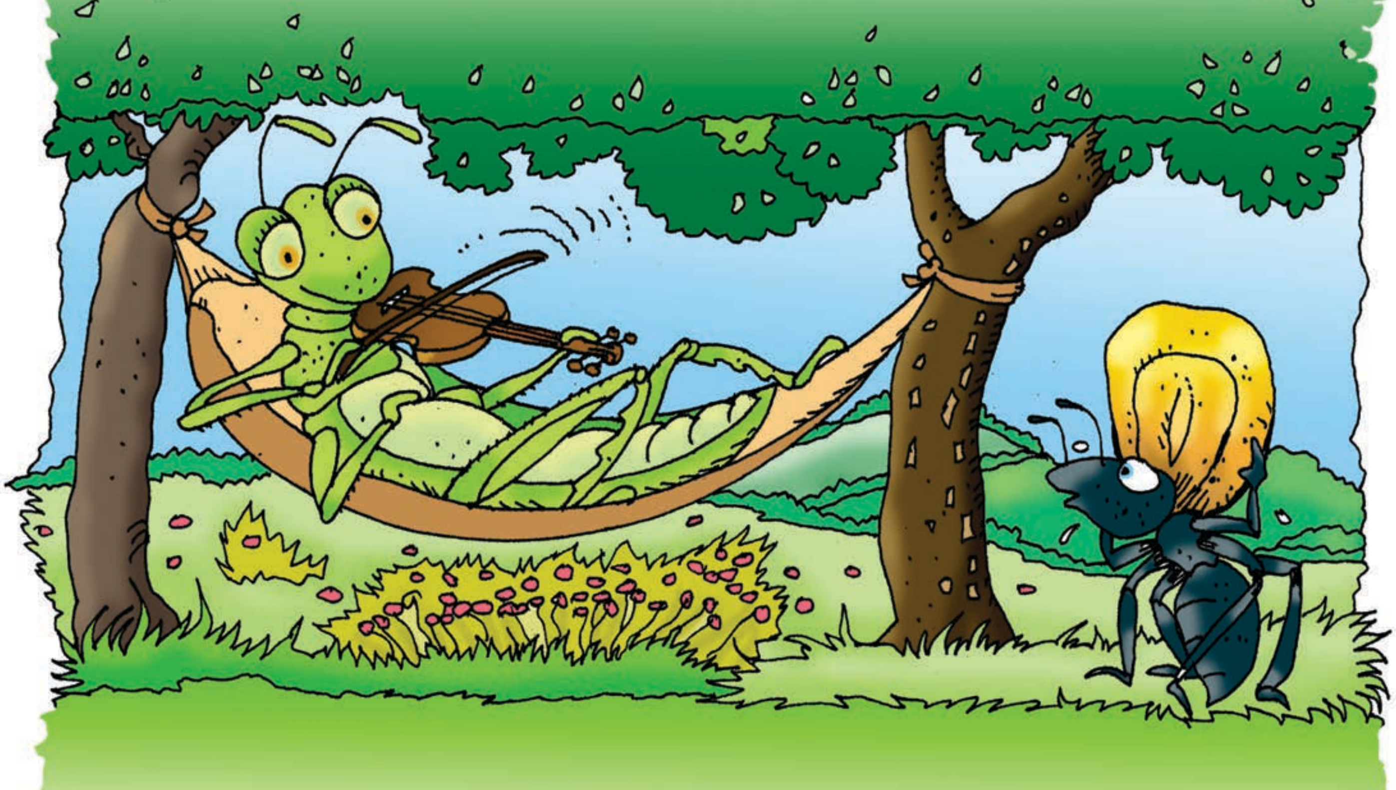

चींटी - तो गाओ फिर गाना। मैं तो बरसात के लिए दाना इकट्ठा कर रही हूँ। तुम भी भविष्य के लिए कुछ इकट्ठा कर लेते तो अच्छा होता।

टिड्डा - कल की कल सोचेंगे। अभी तो मज़ा करें। तुम ही इस गर्मी में जान दो। (बरसात का मौसम आ जाता है। आकाश में बादल छाए हुए हैं। पानी बरसने लगता है।)

क्यों ?

हवा का रंग चुराया किसने ?
पानी मधुर बनाया किसने ?
क्यों सूरज नहीं रात में आता ?
चाँद सुबह कहाँ छिप जाता?

धरती क्यों चौकोर नहीं है ?
बिन सूरज होती भोर नहीं है ?
क्यों चॉकलेट के पेड़ नहीं हैं ?
खिलौने डाल पर लटके नहीं हैं ?

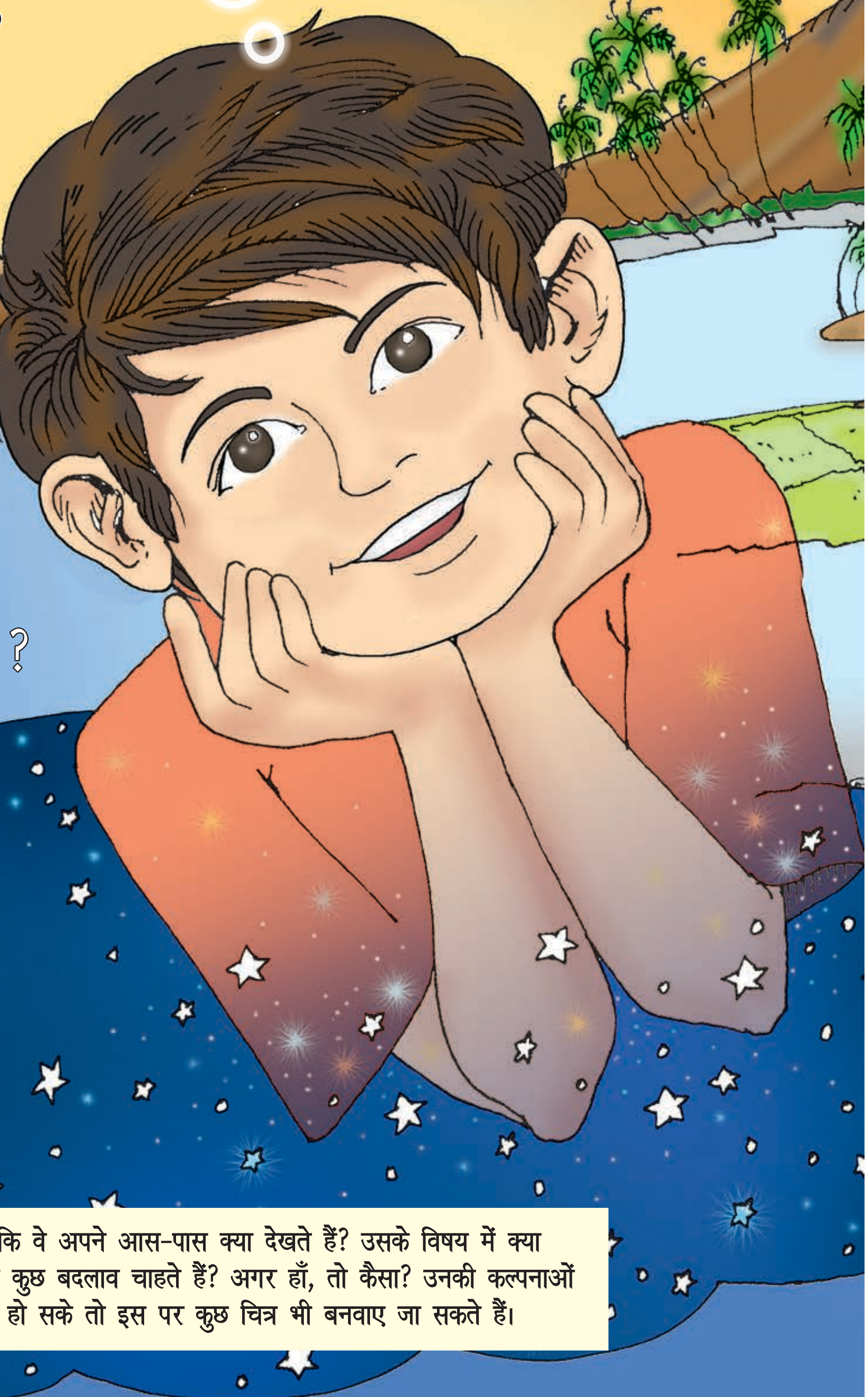

शिक्षण-संकेत : छात्रों से बातचीत करें कि वे अपने आस-पास क्या देखते हैं? उसके विषय में क्या सोचते हैं? क्या वे भी अपने आस-पास कुछ बदलाव चाहते हैं? अगर हाँ, तो कैसा? उनकी कल्पनाओं को पंख लगाने का अवसर प्रदान करें? हो सके तो इस पर कुछ चित्र भी बनवाए जा सकते हैं।